

DPN5628

Title: यज्ञे याये विधि / ~~YAGNE~~ YĀYE VIDHI
YAJNE YAYE

J/

Run. No. 6319

Cat. No.

Micro. No.

Subject यज्ञे याये विधि Ritual

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. ✓ New. / Maith. - New. / New. - Nep. / Newa direction

Size in cms. 21.5 x 7.5

Folios 12

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Judda Malla १३५६

Script: New. ✓ / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus.:

Calitpur

Material: palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon:

स्वास्ति वाचः । Svasti vacam

ॐ श्रीमहा श्री २ जम्बुद्वीप नेपाल मण्डले श्री स्वयम्भू स्थाने, श्री ललिता पुर्यान्ता
नादा पौर जनानां सर्व सत्त्व अङ्गति समीपार्थिः कल्पितानां भू भुक् कामार्थः
शान्तिं पुष्टिं रक्षां कुरुस्वस्ति स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ श्री २ ललितापुरी श्रीमानिगलादीपतिः श्रीमहालज्जार्थराज श्री २ अथ इन्द्र मङ्ग
पुत्रु धातुलक्ष्म ऊरुवत् स्वः सिद्धि कामार्थः सर्व दानु परिभञ्जनार्थः
कल्याण कामार्थः स्वास्ति स्वाहा

15

10

5

0

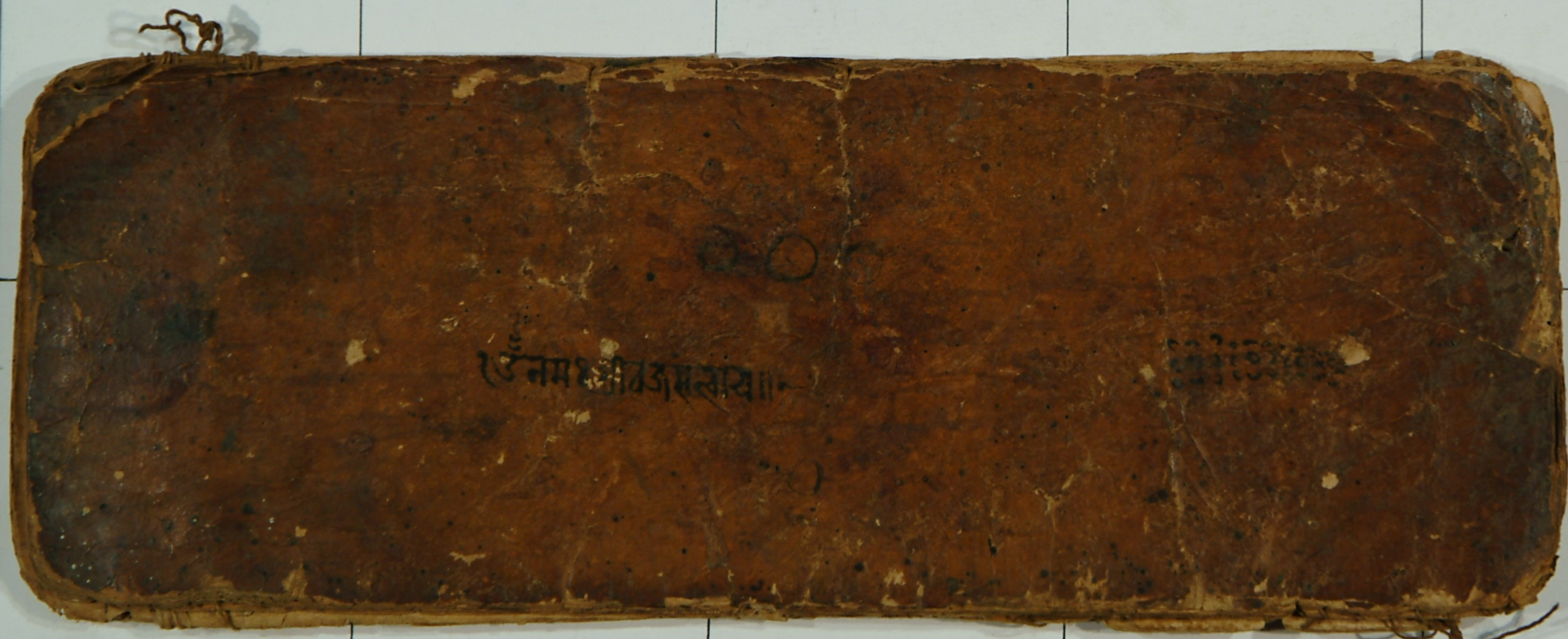
CMTS

5

10

15

20



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमः शिवाय ॥ यद्गुणविधि ॥ याचना विधि ॥ धूनकाव ॥ अथवाक
नसूर्याद्ययूजागुणि ॥ धनगुणराद ॥ यादार्थयूजा ॥ ॥ धनगुणसिंहास
विधाय ॥ ॥ यंत्रगुरुसाधनयाय ॥ कै ॥ सकुर्वन्नाय ॥ धर्मकाय ॥ विय ॥ ॥
धनिधूनडावमजागाथांयूजारात्रजायक ॥ गुणमधुल ॥ प्रषवत्रि ॥ सिन्ध
यूजा ॥ ॥ प्रहस्यदनकावदगुलिशय ॥ ॥ धनकृशयूजा ॥ उंकलश्वद
प्रमधुलयकुविशाय ॥ कलशशूनरावयग ॥ गगावंकाप्रधकृश ॥ आकाश

धगुकधर्मादया ॥ यंकाप्रनसर्वगयागन ॥ याधिविर्कोमृगं ॥ संयुद्धकप्रसं
रावयग ॥ ॥ धननयाजन ॥ ॥ उंआखद्युगारुद्रुट् ॥ संखादकनयाक
ध ॥ आः खद्युगारुसर्वयायदहनकप्ररुद्रुट् ॥ यत्रयगिजा ॥ आः खद्युग
धुंरुः ॥ सर्वयायविद्यमालारभीकप्रुद्रुट् ॥ संषय ॥ आः खद्युगारुसर्वक
क्षायकभीगीकप्रुद्रुट् ॥ यूसामंखाद ॥ आः खद्युगारुसर्वयवनमलायन
यद्रुट् ॥ गुक्शवादनसा ॥ आः खद्युगारुसर्वयूक्षानमरायाषय ॥ रुद्रुट् ॥

15
साधेयद॥ आः खलु ग्राह सर्वेयाय उज्जनासय २ हंरुट् ॥ एकादनस्य ॥ आः खलु
ग्राह सर्वेयाय मत्रयत्र २ हंरुट् ॥ कायउ ॥ आः खलु ग्राह सर्वेयाय दहनक
ल २ हंरुट् ॥ खदायीगात्र ॥ उँ आः ॥ अत्रयि ॥ आदाकयानयादि ॥ म३
गीयाकययादि ॥ कृस० ग० दस० महाका० सुयन० ग्वगत्रास ॥ श्रीश्रि० मग०
धगियजाधूनकाउ ॥ यस्तुलं मूत्रय ॥ गगाअत्रिकृधु० भाधन ॥ उँ आः खलु ग्रा
हंरुट् ॥ गविलखनहाय ॥ उँ वंखं सुं वं हं ॥ मदनिवडी एवयउवन्धं ॥

10
5
यजाविस्तान ॥ यंचवीहिकृ गमह ॥ उँ वजसलुआ ३ ॥ कृ गमस्कात्र ॥ उँ आः सुं
०० ममहाकृ गमदिया ४ य विगवुद्धदवगा ४ वृद्धधर्मसंघत्रगा ४ य विवी
गदलागरी ॥ दानयगउजमानस्य सर्वेविघ्नयुगं निवृत्तनु सगिस्वाहा ॥ ॥
०० न्दादिलाकयालयुर्थं न्यास ॥ ॥ सिगन ॥ मार्यनग ३ ग कादग ३ ॥ ॥
उँ वृद्धश्रयानुसर्वे० गदनूजिनसूगा० दवगागल्यसन्ना० वृद्धायालाकया
ला ॥ स्वसूगदिवसगा० दवगारि ४ सभगा० गनाकल्याहविन्ना० सकलजन

यविः गद्यत्रयार्थनायः यज्ञागृह्णन्नुमानि विधयु ॥ विदिगाय यज्ञागर्कय
 ॥ काष्टः श्रमधन ॥ उं आ ४ ख धु वा रु रुं रुट् ॥ संखलषनहाय ॥ ॥ उं क व र
 रु ॥ सिमगयागयायक ॥ ॥ रूगाग्रियायक यिगाग्रन ॥ ॥ कं व मित्रासग ॥
 उं अत्रयायायमनार्थयगिह्रुखाहा ॥ उं अं ऐं ओं आ ४ ख धु वा रु अत्र्यसर्वविघ्न
 ल २ रुं ॥ रूगाग्रिगर्थेन ॥ ॥ ग नास्त्रिवाय ॥ दानयगजजमानस्याया
 दि ॥ उं अत्रिह्रुल २ रुं ॥ अत्रिह्रुयन ॥ ॥ उं वजयर्ज आ २ ॥ सर्वरुह्रुनय

उहना ॥ यमन ॥ ॥ गगुह्रुलिगाग्रिमधः यंकात्रजं यममालयः नदयार्थं
 वंजागं गिकानाग्रिमधुलः त्रुकावाह्वं पीगवर्धुः मकमूरवं यमुरजं वामद
 धुकमधुलूषयं सर्ववददाक्रमालाधलं पीगंववारावधरुषिगं यज्ञायवि
 गृः गिनगुं उठामकूटप्रविष्टं वजस्रस्त्रालं कर्गः मोत्रिनसमाग्रिविराया ॥
 उं नरुहिमहारुगदवविद्विउसंगमः गृहीत्वाह्रुगिमहालसिमन्निहिगारया ॥
 ॥ यननरुह्रुनाग्रिमावाह ॥ उं आ ४ ट किं उं रुं ॥ ॥ ॥ गिमनुधटकिं वाज

मूडाया ॥ आकर्षक ॥ न्यत्राजन ॥ उं आ ४ स्वधुवाहं रुं रुं ॥ याकृद ॥ गगा अग्नि ॥
 उं अल्यदियदोषा विषा विषमहा गिर्यहय कय वाहनाय ॥ दृग्धुजहं वहा ४ स
 मयसुखहा ४ ॥ उं अल्ययवसुक्तायाय अर्धयुगिक्ता साहा ॥ उं वज गज आ ॥ सम
 यसुखयवम ॥ गगादोयानिसं ॥ शीमन्कायनय सुथा ॥ यागनागा ॥ जया
 नां ॥ अजकप्रधमवयवुगादडासमावर्ण ॥ यावियहाविकर्मवि ॥ उं सर्व
 गथागगकायवि ॥ शीमन्साहा ॥ कायास्मान ॥ यं वायहावयूजा मुनि ॥

नूजसंवीज नियाग ॥ यादि ॥ ॥ गगा अग्नि शीमां ॥ ॥ ग्रायागस ॥ अखल
 यथडाव अग्नि दूधुडायक ॥ उं आ ४ स्वधुवाह ॥ अल्य ४ सर्व विषरुप्ररुं ॥
 गदनूयागि ॥ शीमन् ॥ उं आ ४ स्वधुवाहं रुं रुं ॥ याकृद ॥ उं जी साहा ३ ॥ दृग्धुग ॥
 प्रनाद्युगदायक ॥ उं आ ४ स्वधुवाहं रुं रुं ॥ वीर्या विज्ञान ॥ उं सर्वयायदहनवज
 यसाहा ॥ उजमानद्युगसकासायक ॥ गगा अग्नि मुखप्रकाप्रधः यवरुल्युमाधं ॥
 मुकवज विराय ॥ उं अल्यय साहा ३ ॥ दृग्धुग ॥ उं अ ४ साहा ॥ समीप ४ लान ॥

अक्षदसं यलसयुंडदया ॥ ॐ अक्काय स्वाहा ॥ अक्काय ॥ ॐ वज्र सामाय स्वाहा ॥
यलासगस्य ॥ ॐ वज्री भ्राय स्वाहा ॥ अदित्रस्य ॥ ॐ वज्र वृद्धाय स्वाहा ॥ अयामागस्य ॥
ॐ वज्र कुवत्राय स्वाहा ॥ वगस्य ॥ ॐ वज्र वलाय स्वाहा ॥ इमत्रस्य ॥ ॐ वज्र अनिष्टत्राय
स्वाहा ॥ समीकस्य ॥ ॐ वाषिष्ठाय स्वाहा ॥ अक्षकस्य ॥ ॐ वज्र लगाय स्वाहा ॥ यास
स्य ॥ ॐ वज्र वीजाय स्वाहा ॥ वज्रगत्र ॥ ॐ मधून स्वाहा ॥ मधून ॥ ॐ अक्षकाय स्वाहा ॥
अक्षकस्य ॥ ॐ सर्वयाय यजमनाय स्वाहा ॥ वैककस्य ॥ ॐ वज्र मरुकाय स्वाहा ॥

जामस्य ॥ ॐ सर्वकुंजाय समनाय स्वाहा ॥ कदवगमात्रियविग्वनां ॥ ॐ अयं
गिरुगवज्रवजाय स्वाहा ॥ कुंज ॥ ॐ वजायूय स्वाहा ॥ इर्वो कुंधुस्य ॥ ॐ सर्वयाय दह
नवजाय स्वाहा ॥ गीत्रस्य ३ ॥ ॐ सर्वयाय दह स्वाहा ॥ ॥ ॐ वज्रयूय स्वाहा ॥ अरुव
धुंगइत्रस्य ॥ ॐ वज्र वगमाय स्वाहा ॥ यवस्य ॥ ॐ वज्र दधमाय स्वाहा ॥ अमधूमस्य ॥
ॐ वज्र विजाय स्वाहा ॥ धान्यस्य ॥ ॐ वज्र मरुवलाय स्वाहा ॥ माषस्य ॥ ॐ वज्र माहाका
लाय स्वाहा ॥ म्वाग ॥ ॐ वज्र कत्राय स्वाहा ॥ कात्राय ॥ ॐ वज्र कालव स्वाहा ॥ कद

15

10

5

0

CMTS

5

10

15

20



गुवि॥॥ ॐ वज्रमूर्गे नमः स्वाहा॥ मूर्गे ॥ ॐ वज्रलाजाय स्वाहा॥ लाजा ॥ ॐ सर्व
थे सिद्धे स्वाहा॥ सुषया ॥ ॐ सर्वे संयद स्वाहा॥ द विगु जनसा ॥ ॐ वज्र विरिंग काय
स्वाहा॥ ययंगु ॥ ॐ वज्रदगन रुलाय स्वाहा॥ कालरुलस्य ॥ ॐ आ ४ रुं ॥ अनयागी
गस्वहागया॥ ॐ ॥ यनयमाह निविय ॥ ॐ अल्ययदिया विषा विष ॥ महाशियरुव
कयवारुनाय॥ दानयगंज उमास्ययादि॥ यं याय हात्रयूजामुनि॥ ॥ यनजाग
नमालसा॥ जागद्यन ॥ ॥ कूक्षुयत्रिनमयागं॥ द्वागिगदकयदं॥ यनय
धुनादेवयानि॥ कूक्षुयद्यनमययगं॥ ॥ यं ययद्वस्त्रनवाय॥ यं याय हात्रयू
जामुनि॥ ॐ ॥ ॐ गगायायमनादिकत्वा॥ लाकार्कप्रज्ञानाग्निमिरावा॥ क्षालाकाय
ल्लो॥ यद्वात्यद्रुदिकमलयन्तामनायलिमधुलाधियगि॥ वीजनिष्ठानविद्रवी
जययत्रिष्णमन॥ मधुलधियगिसमाधुलयं विरावा॥ ॥ ज्ञानसखं॥ वजां
कूक्षुदिरिवाकृष्ययवद्य॥ वद्वामकाष्य॥ वीरमीव॥ समप्रसन्ननमदकीक
त्वा॥ यायायमनादिकं कत्वा॥ आकर्षयूष्यं न्यास॥ यूजामुनि॥ ॥ गगाअग्नि

यनयथमाह निवियथ

जिह्वायां ॥ ब्रह्मकाय ॥ शुक्रवजं विराया ॥ ॥ नक्षत्रे हयादिकं ॥ मन्त्रमनुव
 श्रुयात् ॥ यनमात्रसाजागनसधलग ॥ यवक इय ॥ यनरूनाहृति ॥ ॥
 यनदडायूजा ॥ दडागाहृतिविय ॥ ॥ ॥ यनिमात्रककमोधूनडावा ॥ यन
 यूर्क गाय ॥ ॥ उंगगद्यगगद्यविलाकिन ॥ नजात्राजायजमूकस्यगानि
 यूर्किं कूडं स्वाहा ॥ विलरूल ॥ नात्रिष्टात्र ॥ उं आ ४ समाधि रूल अ ४ स्वाहा ॥
 उमत्रस्य ॥ उं वज्रवासस स्वाहा ॥ यमु ॥ उं सुयूष कूलजालनिय स्वाहा ॥ उरूल ॥

उं वज्रयूषा स्वाहा ॥ दारूल ॥ उं धर्मधर्मराजदह २ सर्वविद्यायानिं कूड स्वाहा ॥
 यन्त्रनयुलि ॥ उं आ ४ वज्रयूषा स्वाहा ॥ यूप ॥ उं आ ४ वज्रालाकडो स्वाहा ॥ दीय ॥
 उं आ ४ वज्रकन्धमूलाय स्वाहा ॥ कन्धमूलादि ॥ उं वज्रगामूत्राय स्वाहा ॥ यमत्र ॥
 उं वज्रसूयकाय स्वाहा ॥ यं ययकयां ॥ ॥ यनसविषिइय ॥ ॥ उं वज्रवसंक
 लाय स्वाहा ॥ कसूम ॥ उं सर्वत्रनाकात्राय स्वाहा ॥ गगयूष ॥ उं वज्रविजय ॥ हं
 द्स्वाहा ॥ सुमूष ॥ उं सर्वकर्मकत्रिय स्वाहा ॥ नागकगत्र ॥ उं वज्रमरुद स्वाहा ॥

15
10
पूयक गत्रा ॥ उं हुन २ हुं रुट् स्वाहा ॥ स्या गङ्गा कु ॥ उं कृत् २ सर्व कार्या सिद्ध मद वि
जय स्वाहा ॥ कूं कूं ॥ उं मद मद सर्व दयान हुं स्वाहा ॥ कयूत्र ॥ उं वसिष्ठ रुं रुट्
स्वाहा ॥ प्रकन्दना ॥ उं जय २ हुं रुट् स्वाहा ॥ श्री ख धु ॥ उं हि वन्य यु द स्वाहा ॥ गैत्र
गत्रा ॥ उं सर्व वन्य यु द स्वाहा ॥ गन्धर्वा ॥ उं सर्व मय सर्व आवय की स्वाहा ॥ अयु
त्रि ॥ उं सर्व संजा ग सा धय की यु सि कृत् स्वाहा मयु युत्रि ॥ उं क विव नि सर्व सिद्धि कृत्
की स्वाहा ॥ प्रकृतित्र ॥ उं सर्व प्रा गय सम नाय स्वाहा ॥ उष वि ॥ ॥ यनय पु महा

5
राजा या ग आरु नि वि य ॥ ॥ उं धृगं ॥ विवृट् क विवृया रु कृत् य दि य पु महा
दि ग व सि ग य वि द मा रु नि ग रु २ दान य ग ऊ ऊ मान स्य सर्व सत्वां ल रु नु स्व सि
स्वाहा ॥ १ ॥ उं श्री म ग्नी २ ऊ मू दी य न या ल म नु ल श्री स्व य मु स्तान श्री ल लि ग य
के ना दा यो व ऊ ना नां सर्व सत्त्व ष ड् नि सं सा रा र्क्ष व च सि ग नां रू रू रु काम ना र्थ
भ किं यु सिं व र्शां कृत् स्व सि स्वाहा ॥ २ ॥ उं श्री २ ल लि गायत्री श्री मा नि गत्रा वि य नि
४ श्री महा राजा वि रा उ श्री २ ऊ य श्री वृ न्द म नू य रू पा कू ल स्य ॥ अख धु रु वं अ

15
10
राज्येव कृयात्रकृययसुथा धर्मराजाय नागम गन्धर्वोसूत्र किन्नराः प्रिय
लिहास्तिगादवाः अग्निस्त्वनियासिनी महायाजास्तिगादवाः युगिनिमान
यवदनं नित्मानयदवाकाः सूहायासूयवियगिः मालवियाकषाणुः महा
षानियासिनी यग्युमिस्तिगायेव स्तिगाजनं यिगात्रियू राजनं सर्वत्राका
नाः त्रणयुत्सयिगात्रयः मूदिगायु मिऊयाका विमत्रायांकुगम्यराः अयूक
स्तिनिवासानं सायत्रायांकुगम्यराः धर्ममध्यायूनाः श्येव इर्यायांकुगय

5
राज्येव कृयात्रकृययसुथा धर्मराजाय नागम गन्धर्वोसूत्र किन्नराः प्रिय
लिहास्तिगादवाः अग्निस्त्वनियासिनी महायाजास्तिगादवाः युगिनिमान
यवदनं नित्मानयदवाकाः सूहायासूयवियगिः मालवियाकषाणुः महा
षानियासिनी यग्युमिस्तिगायेव स्तिगाजनं यिगात्रियू राजनं सर्वत्राका
नाः त्रणयुत्सयिगात्रयः मूदिगायु मिऊयाका विमत्रायांकुगम्यराः अयूक
स्तिनिवासानं सायत्रायांकुगम्यराः धर्ममध्यायूनाः श्येव इर्यायांकुगय

